International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(5): 17-18

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(5): 17-18
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 06-07-2016
Accepted: 07-08-2016

कपिल देव
शोधच्छात्र संस्कृत विभाग,
जम्मू वि०वि० जम्मू

Correspondence
कपिल देव
शोधच्छात्र संस्कृत विभाग,
जम्मू वि०वि० जम्मू

तन्त्रशास्त्र में कामकलाकाली का स्थान

कपिल देव

सारांश
तान्त्रिक वाङ्मय अत्यन्त विशाल है। व्याकरण आदि शास्त्रों के अध्ययन के बाद जिन मनीषियों की ईश्वरकृपावश तन्त्रशास्त्र में रुचि हुई उन लोगों का एक स्वर से यही निर्णय है कि तन्त्रशास्त्र की शरण में गये बिना जीव को वास्तविक मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती। तन्त्रशास्त्र में शिव और शक्ति का स्थान सर्वोपरि एवं सर्वमान्य है। शिव और शक्ति एक ही हैं क्योंकि एक के बिना दूसरा नहीं रह सकता।

नदीनां च यथा गंगा पर्वतानां च हिमालयः।
तथा समस्तशास्त्राणां तन्त्रशास्त्रमनुत्तमम्।। [1]

कूटशब्दः अनुष्ठान, पार्थक्य, चिद्रूपा, जीर्णावस्था, कालसंगर्षिणी, भुजंगप्रयात

प्रस्तावना
शिवसंहिता का यह वचन अर्थवाद नहीं अपितु यथार्थ कथन है। व्याकरण आदि शास्त्रों के अध्ययन के बाद जिन मनीषियों की ईश्वरकृपावश तन्त्रशास्त्र में रुचि हुई उन लोगों का एक स्वर से यही निर्णय है कि तन्त्रशास्त्र की शरण में गये बिना जीव को वास्तविक मोक्ष प्राप्ति नहीं हो सकती। तन्त्र एक व्यापक शब्द है। षडाम्नाय के साथ साथ समस्त सम्प्रदाय भारतीय–अभारतीय समस्त उपासना पद्धति तन्त्र की परिधि में समाविष्ट है। वैदिक एवं अवैदिक उपासना प्रक्रियाओं की भी चरम परिणति तन्त्र में ही होती है। तन्त्र सर्वधर्म के प्रति समभाव का आदर करने वाला शास्त्र है। इस साधना के आचार्य अभिनवगुप्त के निम्नलिखित वचन इसमें प्रमाण है–

अन्तः कौलो बहिः शैवो लोकाचारे तु वैदिकः।
सारमादाय तिष्ठेत नारिकेलफलं यथा।। [2]

तान्त्रिक वाङ्मय अत्यन्त विशाल है। इसमें दो विभाग हैं– तत्त्व और साधना। तत्त्व के विषय में अद्वैत, द्वैत तथा द्वैताद्वैत नामक जो भेद हैं उनका आधार ज्ञान है। जहाँ तक साधना का प्रश्न है यह दो प्रकार की होती है– अन्तरंग साधना एवं बहिरंग साधना।
अन्तरंग साधना सर्वत्र प्रायः समान होती है किन्तु बहिरंग साधना में जहाँ एक भाग में अनुष्ठानजन्य पार्थक्य है वहीं दूसरे भाग में अनुष्ठान से असम्बद्ध उपाय के विभिन्न अंशों को अवलम्बन का भेद किया जाता है।
तन्त्रशास्त्र में शिव और शक्ति का स्थान सर्वोपरि एवं सर्वमान्य है। या यूँ कहें कि शिव–शक्ति से ही तन्त्रशास्त्र का वर्चस्व है। वास्तव में शिव और शक्ति एक ही हैं क्योंकि एक के बिना दूसरा नहीं रह सकता। तद्यथा–

न शिवाः शक्तिरहितो न शक्तिर्व्यतिरेकिणी।
शक्तिशक्तिमतोरुक्ता सर्वत्रैव ह्यभेदिता।।

तन्त्रशास्त्र में जो शक्ति स्वीकृत है वह चेतन है। चिद्रूपा यह शक्ति स्वतन्त्र तथा विश्व का कारण है। 'चितिः स्वतन्त्रता विश्वसिद्धिहेतुः' [3] इस शक्ति का न कोई परिमाण है और न कोई परिणाम व नाश है। तन्त्रशास्त्र की प्रधान चित् शक्ति ही इतर ग्रन्थों में 'काली' नाम से विख्यात है। जिसका सम्बन्ध काल से माना जाता है।

कालो के सम्बन्ध में तन्त्रशास्त्र में 300 के लगभग ग्रन्थों के नाम उपलब्ध हैं, जिनमें बहुत से ग्रन्थ लुप्त प्रायः हो चुके हैं तो कुछ पुस्तकालयों में जीर्णावस्था में हैं। जो उपलब्ध हैं वे भी अंशमात्र ही है। अस्तु, 'कामधेनु तन्त्र' [4] में लिखा है कि ''काल संकलनात् काली कालग्रासं करोत्यतः।'' [5]

तन्त्रों में स्थान–स्थान पर श्यामाकाली (दक्षिणकाली) और गृह्यकाली को केवल 'काली' संज्ञा से पुकारा है। 'काली' का विस्तृत वर्णन आदिनाथ प्रणीत 'महाकाल संहिता' में वर्णित है। इसी महाकाल संहिता के अन्तर्गत 'कामकलाकाली' खण्ड उपलब्ध है। डॉ० किशोरनाथ झा का मन्तव्य है कि 'महाकाल संहिता' दो ही खण्डों में पूर्ण है–

1. कामकलाकाली खण्ड, एवं
2. गुह्यकाली खण्ड।

कामकलाकाली एवं गुह्यकाली नामक दोनों खण्डों में मुद्रित श्लोकों की संख्या पाँच हजार से सात हजार के बीच ही है। परन्तु डॉ० झा की उक्ति की संगति महाकालसंहिता के उपसंहार वाक्य (में वर्णित 'पंचाशतसाहस्त्र्यां महाकालसंहितायाम्') [6] के साथ सही नहीं बैठती।

काम तत्त्व जहाँ सम्पूर्ण प्राणियों में व्याप्त रहने वाला तत्त्व है वहीं मानव शरीर सोलह कलाओं से निर्मित होता है। हाँ उन कलाओं पर उसका अधिकार नहीं होता, वह सोलह कलाएँ पंचमहाभूत, पंचज्ञानेन्द्रिय, पंचकर्मेन्द्रिय और एक मन है जबकि काली भी शक्ति का एक स्वरूप है। इस विश्वप्रपंच को चलाने वाली पारमेश्वरी शक्ति की अनन्त शक्तियाँ होती हैं। समस्त प्राणियों को प्रेरित करने वाली तथा समस्त इन्द्रियवृत्तियों का संचालन करने वाली इन शक्तियों का समान रूप से ठहरी हुई एक और पारमेश्वरी शक्ति है उसका नाम है काली या कालसंगर्षिणी है। इस काली के अनन्त नाम और अनन्त रूप हैं। इसकी उपासना वाम एवं दक्षिण दोनों विधियों से की जाती है। इस देवी से सम्बद्ध प्रायः साठ ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है उन सब में प्रमुख महाकालसंहिता 50,000 श्लोकों वाला ग्रन्थ है। इसमें काली के वाममार्गी उपासना का अद्भुत वर्णन है। यह आगम ग्रन्थ नव भागों में विभक्त है। प्रस्तुत कामकलाकालीखण्ड में नव कालियाँ–

1. दक्षिणकाली,
2. भद्रकाली,
3. श्मशानकाली,
4. कालकाली,
5. गुह्यकाली,
6. कामकलाकाली,
7. धनकाली,
8. सिद्धिकाली,
9. चण्डकाली का वर्णन आता है। कामकलाकाली खण्ड में कामकला नामक योग का वर्णन आता है। यतोहि इस योग की अधिष्ठात्री देवी कामकलाकाली है अतः इस खण्ड का नाम कामकलाकाली खण्ड पड़ा ऐसा प्रतीत होता है। महाकालसंहिता के प्रणेता आदिनाथ के अनुसार गुह्यकाली और कामकलाकाली एक ही हैं। भगवान् शंकराचार्य को कामकला का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त था। सौन्दर्यलहरी के निम्नलिखित श्लोकों में उन्होंने कामकला का वर्णन किया है–

> मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
> हरार्थ ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथ्कलाम्।
> स सद्यः सङ्क्षोभं नयति वनिता इत्यति लघु
> त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम्।। [7]

तथा–

> शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
> स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः।
> अभी हल्लेखाभिस्तिसृभिखसानेषु घटिता
> भजन्तो वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम्।। [8]

कामकाली नव कालियों या देवियों में श्रेष्ठ है। वस्तुतः गुह्यकाली ही मन्त्र, ध्यान, पूजा और प्रयोग के भिन्न होने से कामकलाकाली कही जाती है। इसका मूलमन्त्र 18 अक्षरों वाला है। कामकलाकाली के दो रूप है– निराकार और साकार। कामकलाकाली का साकार रूप बीभत्स, रौद्र, उग्र और भयानक कहा गया है। इस देवी का त्रैलोक्यमोहनकवच धारण करने पर शरीर अजर, अमर और वज्रसार हो जाता है। कालकेय असुरों पर विजय प्राप्त करने के लिये रावण ने भुजंगप्रयात छन्दोबद्ध श्लोकों से इस देवी की अर्चना की थी। कामकलाकाली का शतनाम या सहस्रनाम अद्भुत फल देने वाला है।

कामकलाकाली महाकालसंहिता की मुख्य प्रतिपाद्य देवता है। दक्षिण आदि नव कालियों में यह मुख्यतमा है। कतिपय संदर्भों में भी यह अन्य देवियों से विशिष्ट है। इसके मन्त्र के पचीस प्रकार हैं। पांच अक्षर से लेकर दश हजार अक्षर वाले मन्त्र मात्र इसी देवी के हैं। मरीचि, कपिल, हिरण्याक्ष, लवणासुर, वैवस्वत, मनु, दत्तात्रेय, दुर्वासा, उतंक, विश्वामित्र, और्व, पराशर, भगीरथ, बलि, नारद, गरुड़, परशुराम, शुक्राचार्य, सहस्रार्जुन, पृथु, हनुमान् आदि ने पृथक्–पृथक् मन्त्रों के जाप के द्वारा इसकी आराधना कर अपने उद्देश्यों की पूर्ति की थी। इस काली की महिमा इसी से झलकती है कि इन उपासकों में से किसी ने भी शताक्षर, सहस्त्राक्षर या अयुताक्षर मन्त्र का जाप नहीं किया फिर भी इनके व्यक्तित्व एवं ऐश्वर्य से संसार अपरिचित नहीं है।

पुनश्चर्यार्णव के अनुसार काली का स्थान

सुप्रसिद्ध तन्त्रग्रन्थ पुनश्चर्यार्णव में काली के नौ भेदों का नामोल्लेख है तद्यथा–

1. दक्षिणा काली,
2. भद्रकाली,
3. श्मशानकाली,
4. कलाकाली,
5. गुह्यकाली,
6. कामकलाकाली,
7. धनकाली,
8. सिद्धिकाली, एवं
9. चण्डकाली।

उपर्युक्त भेदों में से दक्षिणाकाली और भद्रकाली दक्षिणाम्नाय के अन्तर्गत आते हैं तथा गृह्यकाली, कामकलाकाली, महाकाली और श्मशानकाली उत्तराम्नाय से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त सभी उर्ध्वाम्नाय से सम्बन्धित हैं। काली की उपासना तीन आम्नायों से होती है। तन्त्रों में कहा गया है कि 'दक्षिणोपासकः कालः' अर्थात् दक्षिणोपासक महाकाल के समान हो जाता है। उत्तराम्नाय–उपासक ज्ञान योग से ज्ञानी बन जाता है। उर्ध्वाम्नाय के उपासक पूर्णक्रम उपलब्ध करने से निर्वाणमुक्ति को प्राप्त करते हैं। हम जिस 'कामकलाकाली' की चर्चा कर रहे हैं उनकी गणना उत्तराम्नाय में होती है। इसी आम्नाय के उपासक रावण आदि हुए हैं जिन्होंने ज्ञान की परिभाषा बदल डाली थी अर्थात् सर्वज्ञ बने।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 तन्त्रलोक, 4/203
2. तन्त्रलोक, 5/278
3. शिवदृष्टि, 3/2
4. कामधेनु तन्त्र, 3/64
5. योगसूत्र, 4/23
6. महाकाल संहिता, 2/234
7. सौन्दर्यलहरी, 17/5
8. सौन्दर्यलहरी, 32/2